प्रभात प्रकाशन का 73वां साल
स्थापित 1944
प्रभात
सीधी बात-सच्ची बात
प्रभात
लखनऊ, मंगलवार, 21 नवम्बर 2017

लखनऊ व एनसीआर में कैसे आयी जहरीली कणों की हवाएं!

लखनऊ। प्रभात

विगत वर्ष 25-26 नवम्बर 2016 को हिमांचल के नजदीक दिल्ली व हिमालय से सटे उत्तर प्रदेश के लखनऊ शहर में शीतलहर व कुहरे के साथ साथ हवा में जहरीले कणों का धुंध छाया हुआ था। इससे सांस लेना मुश्किल हो रहा था। उस समय मौसम वैज्ञानिकों का अनुमान उनके विश्लेषणों पर खरा नहीं उतर पा रहा था। पिछली दिवाली 30 अक्टूबर 2016 को थी, उसके कुछ दिनो बाद लगभग 10 दिनों तक कुहरा छंटने का नाम नहीं ले रहा था। जनता व पशु-पक्षी भी ठण्ड व कुहरे से उत्पन्न प्रदूसित वायु मे उपलब्ध जहरीले कणों से बेहाल हो चुके थे। यह जानकारी नहीं थी कि इससे साँस लेने में दिक्कत क्यों हो रही है।

स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज (एसएमएस), लखनऊ के निदेशक प्रो. भरत राज सिंह का कहना है कि हवा में प्रदूषण का मुख्य कारण औद्योगिकीकरण की अंधाधुंध बढोत्तरी व वाहनों की निरन्तर मांग तथा उसके इंजन से उत्पन्न धुआँ जो वाहनों के निकास पाइप से निरंतर निकलता रहता है तथा उसमे बढोत्तरी होती रहती है। आसमान में लगभग 10 से 20 किलोमीटर दूरी पर ग्रीन हाउस गैसेस का अधिक से अधिक जमाव व धरती से विकरण हुयी सूरज की किरणों से धरती गरम हो रही है। इस पर वाहनों से निकलने वाले धुएं के क्वालिटी को रोकने के लिए जलवायु संरक्षण नीति लागू की गयी है, जिससे पार्टिकुलेट मैटर पीएम.2.5 60 प्रति घनमीटर व पीएम.10 .100 प्रति घनमीटर तक रोकने हेतु तय किया गया है। दीवाली में उत्साह का प्रदर्शन करने वालो की होड़ में बड़े शहरों में पटाखे व धुएं देने वाले फुलझड़ी पर करोड़ों रुपये का वारा-न्यारा किया जाता है और हवा को जहरीला बनाया जाता है। असर इतना गम्भीर हो जाता है कि बारिस के अंतिम दौर व शरद त्रृतु आगमन के इस मोड़ पर रात में हवा में नमी आने से जलविन्दुओ भारीपन आने से ओस का रूप ले लेती है। वही जहरीले कण पुनः धरती के नजदीक जलबिन्दुओ के दवाव में नीचे आ जाते है और साँस लेने में तकलीफ देने लगते है। इस प्रकार की धुएं की धुंध चारो तरफ इकट्ठा होकर पूरे वातावरण में पीएम.2.5 की मात्रा 485 प्रति घनमीटर व पीएम.10 की मात्रा 1700 प्रति घनमीटर तक पहुँचा देते है और कई जगह दिनदूदिन भर धुन्ध के बादल बने रहने से जीवन के लिए घातक हो जाता है। यह मात्रा 6 से 17 गुणा बढ़ जाती है।

प्रो. भरतराज सिंह
निदेशक, एसएमएस-लखनऊ

खतरनाक धुंध से बचाव के उपाय

सभी लोगों को विशेषकर बच्चों व बुजुर्गों को यह हिदायत दी जाती है कि इस मौसम में विशेष सावधानी बरतनी चाहिए-

- वायु प्रदूषण की अधिकता को दृष्टिगत रखते हुये क्रैकर्स के खरीद-फरोख्त पर पुर्णतः प्रतिबंध लगाना अति आवश्यक होगा। ऐसी समय परए कागजए पत्तो व कूड़ा करकट को जलना नहीं चाहिए अन्यथा हवाओ में जहरीली कणों की अधिक बढोतरी होगी।
- सड़क व खुले स्थानों पर झाड़ू का उपयोग, पानी के छिडकाव के उपरांत करना चाहिए जिससे वातावरण में डस्ट व धूल के कण न उड़ें, जो दमा आदि के लोगों के लिए अधिक घातक होगा।
- स्कूल व कॉलेज जहां छात्र-छात्रायें पढ़ती है, अवकाश घोषित कर देना चाहिए तथा बुजुर्गो को बाहर न निकलने की हिदायक देकरए उन्हें साँस व दमा आदि के रोगों से बचाया जा सके, मास्क का भी उपयोग करना चाहिए।
- यदि ऐसी स्थिति सप्ताह भर चलने की सम्भावना हो तो कृतिम बारिश कराया जाय अथवा सभी नागरिको को विशेष हिदायत दी जाय की वह अपने घरों के आस-पास पानी का अधिक से अधिक छिडकाव करें, इससे धुंआयुक्त बादल छंट जाएंगे।
- जहरीली हवा में धुन्ध की स्थिति आने पर अधिक से अधिक लोगो को बाहनो को कम से कम सड़क पर चलाना चाहिए अथवा आड-इवन का फार्मूला लागू कर देना चाहिए।
- धुंध का बादल, हवा के चलने व गर्म स्थान की तरफ टनल के रूप में आगे बढ़ने से धीरे-धीरे कम होगा।